विनोद मेहता: प्रयोगधर्मी संपादक

डॉ. मनोजकुमार भी. पटेल
संशोधक

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 Jan 2020

Keywords
विनोद मेहता, संपादक, कामकाज, पत्रिकाएं

ABSTRACT

श्री विनोद मेहता का जन्म 1941 में रावलपिंडी में हुआ था। विनोद ने सुनीता पोल नामक महिला पत्रकार से शादी की थी। इस दंपति को कोई संतान नहीं थी। उनकी मृत्यु 8 मार्च 2015 में दिल्ली में हुई थी। स्नातक तक पढ़ाई की थी। पढ़ाई में वह सामान्य थे (विकिपीडिया, एनडी टीवी खबर, 2015)। पढ़ाई के बाद विनोद नौकरी की तलाश में इंग्लैंड चले गए और 8 साल बाद लखनऊ वापस चले आए (एनडीटीवी खबर, 2015)। उनका आरंभिक जीवन संघर्ष पूर्ण एवं अनिश्चित रहा (एनडी टीवी खबर, 2015)। बाद में वह मुंबई चले गए। वहां विज्ञापन व्यवसाय में जुड़ गए (एनडी टीवी खबर, 2015)। 1973 में 'डेबोनियर' सामयिक के संपादक बने। यहां से उनकी कारकिर्दी को गति एवं सफलता मिली। 'डेबोनियर' के बाद विनोद ने 'संडे ऑब्जर्वर', 'इंडियन पोस्ट', 'इंडिपैंडेंट', 'पायनियर' एवं 'आउटलुक' में काम किया (एनडी टीवी खबर, 2015)। इनमें से विनोद ने कुछ अखबारों को चलाया, कुछ का आरंभ किया, सभी को संभाला और कामयाब बनाया। 'इंडियन पोस्ट' में काम करते वक्त विनोद ने देखा कि अखबार चलाने वाले लोगों के दूसरे व्यावसायिक हित कैसे प्रभावित होते हैं? और टाइम्स समूह के 'इंडिपैंडेंट' अखबार में काम करते वक्त यह अनुभव किया कि एक ही समूह के दो अखबारों के कर्मचारियों की मानसिकता का टकराव कैसा होता है? (एनडी टीवी खबर, 2015)। विनोद का अति सफल संपादक सफर 'आउटलुक' पत्रिका से शुरू हुआ जो कि जीवन पर्यंत रहा। विनोद ने इसे भारत में सफल एवं अलग पत्रिका बनाई। इस पत्रिका ने भारतीयों को असली पत्रकारिता का परिचय करवाया। विनोद ने 'आउटलुक' में कई चुनौतियों के बावजूद मैच फ़िक्सिंग, वाजपेई और आडवाणी के बीच टकराव, राडिया टेप जैसी कई अति महत्वपूर्ण खबरों को प्रकाशित किया था (एनडी टीवी खबर, 2015)। विनोद पत्रकारिता से संबंधित कई महत्वपूर्ण संस्थानों में बडे पदो पर आसीन रहे थे। उनका सामान्य पत्रिका से शुरू हुआ सफर कद्दावर संपादक के रूप में पूरा हुआ था। उनकी पत्रकारिता बेहद कामयाब, चमकदार एवं चर्चित रही। उनकी सभी पत्रिकाएँ दिखाव एवं सामग्री में विशिष्ट रही। पत्रकारिता की बिना कोई पृष्ठभूमि, शिक्षा एवं तालीम के बावजूद विनोद सफल रहे तो उसके पीछे उनका व्यावसायिक दृष्टि बिंदु, पाठकों के प्रति प्रतिबद्धता एवं उत्तरदायित्व था। इस वजह से उनका जीवन भी दिलचस्प रहा। विनोद स्पष्ट वक्ता एवं सच्चे आदमी थे। विनोद हिंदी अंग्रेजी पत्रकारिता के सेतु, भरोसेमंद संपादक, शानदार शख्सियत, खुद पर हसने वाले, खिलंदड़पन एवं पत्रकारिता के लिए अपनों की परवाह न करने वाले संपादक थे (बीबीसी हिंदी, 2015)। वह खुद पर एवं दूसरों पर बेबाकी से लिखते थे (बीबीसी हिंदी, 2015)। विनोद अपने मालिकों एवं उनके संबंधियों के प्रति वफादार रहते थे लेकिन जब पत्रकारिता की बात आती थी तो वह पत्रकारिता के पक्षधर बन जाते थे (बीबीसी हिंदी, 2015)। विनोद 24

घंटे काम करते थे। वह ईमानदार थे। उन्होंने अपने पद एवं हैसियत का कभी फायदा नहीं उठाया था। विनोद सरकार की समीक्षा के पक्षधर थे। विनोद ने जिसे छुआ उसे कामयाबी मिली (बीबीसी हिंदी, 2015)। उन्हों ने पत्रकारिता के अलावा छः किताबें भी लिखी थी जो कि चर्चित रही थी (बीबीसी हिंदी, 2015)। विनोद ने पत्रकारिता में संपादक के रूप में प्रवेश किया था और संपादक पद पर रहते हुए विदा ली थी।

श्री विनोद मेहता 1941 में अखंड भारत के पश्चिम पंजाब राज्य के रावलपिंडी (हाल पाकिस्तान में) शहर में पैदा हुए थे। अखंड भारत के विभाजन के बाद उनका परिवार भारत के लखनऊ शहर में आ बसा। उस वक्त विनोद तीन साल के थे। उनकी परवरिश फ़ौजी पंजाबी परिवार में एवं लखनऊ संस्कृति के संगम में हुई थी, जिसका नतीजा यह निकला कि वह उदारवादी बन गए। उनकी शालेय शिक्षा ला मार्टिनेर स्कूल में हुई और स्नातक की शिक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय में हुई। स्नातक में तृतीय वर्ग के साथ उत्तीर्ण हुए थे। पढ़ाई में वह सामान्य थे (विकीपीडिया, 2015)।

उनके आत्मवृतांत 'लखनऊ ब्वॉय: ए मेमोयार' के अनुसार देखें तो कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद विनोद नौकरी की तलाश में इंग्लैंड चले गए। वहां पहले से उनका स्कूल ही दोस्त होता है, जिसकी मदद से उन्हें पहली नौकरी मिलती है एक ऐसे फैक्ट्री में जहां उन्हें मशीन के सहारे लोहे की छड़ों को काटना होता है। विनोद ने खुद बताया है कि ब्रिटेन में आठ साल रहने के दौरान इसी तरह के छोटे-मोटे काम करते रहे। आठ साल इंग्लैंड में रहने के बाद विनोद लखनऊ लौट आए तब तक ना तो कैरियर बना और ना ही तय हो पाया कि क्या करना है। बिना किसी योजना के विनोद मेहता मुंबई पहुंचे। उन्होंने लिखा है कि चित्र के 70 के दशक में भारत में मॉडलिंग और एडवर्टाइजिंग में जाने के लिए किसी विशेषज्ञता की जरूरत नहीं होती थी, इसलिए वे उस फील्ड में चले गए। लेखन से लगाव बढ़ रहा था, इसी दौरान उन्होंने मीना कुमार की जीवनी लिखी (एनडी टीवी खबर, 2015)।

1973 में 'डेबोनियर' सामयिक की शुरुआत मुंबई की एक प्रिंटिंग प्रेस के मालिक सुशील सोमानी ने की, कुछ ही महीनों में पत्रिका को बंद करने की नौबत आ गई। विनोद जी को जब इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने मालिक को पत्र लिख डाला कि, आप मुझे इस पत्रिका का संपादक बना दीजिए तो इसे बंद नहीं होने दूँगा। उन्होंने उम्मीद भी नहीं की थी कि सोमानी उन्हें इस पत्रिका की ज़िम्मेदारी सौंप देंगे। उन्होंने इस पत्रिका को जमाने में काफी मेहनत की, कई स्थापित लेखकों को जोड़ा। वाकई में उस दौर के पाठकों को इसका अहसास है कि पत्रिका में लड़कियों की न्यूड फोटो छपने के साथ साथ कुछ अन्य सामग्री भी पढ़ने को मिलती थी, तो उसकी वजह विनोद ही थे (एनडी टीवी खबर, 2015)।

इस पत्रिका को कामयाब बनाने के बाद उन्होंने 1982 में मुंबई के एक प्रकाशक की मदद से देश के पहले साप्ताहिक अखबार के तौर पर 'संडे ऑब्जर्वर' को शुरू किया। फिर विनोद 'इंडियन पोस्ट' पहुंचे। विजयपत सिंघानिया को बाद में यह अखबार बंद कर देना पड़ा। एक अखबार चलाने वाले के दूसरे कारोबारी हित कैसे खबरों से प्रभावित होने लगते हैं इसका दिलचस्प विवरण विनोद अपनी किताब में दिया है टाइम्स समूह के अखबार 'इंडिपैंडेंट' को शुरू करने के एक महीने बाद ही उन्हें यह अखबार छोड़ना पड़ा। 'इंडिपैंडेंट' के अपने अनुभव के बारे में उन्होंने टाइम्स समूह के दो अखबारों के कर्मचारियों की मानसिकता के टकराव का भी चित्रण किया है। लेकिन वाई बी चव्हाण के खिलाफ एक खबर को छापने के बाद उन्हें इस अखबार से असमय विदा होना पड़ा(एनडी टीवी खबर, 2015)।

इसके बाद उन्होंने दिल्ली के 'पायनियर' संस्करण को जमाया। इस अखबार से भी उन्हें महज इसलिए हटना पड़ा क्योंकि तबके मालिक ललित मोहन थापर को लगने लगा कि अखबार की खबरों से उनके दोस्त नाराज़ होने लगे हैं। इस वक्त उन्होंने 'पायनियर' में पत्रकार के तौर पर काम कर रही सुमिता पॉल नामक महिला पत्रकार से शादी कर ली थी। दंपति को कोई संतान नहीं थी। इसके बाद शुरू होता है आउटलुक का कामयाब सफर। इस पत्रिका को अलग बनाने की जद्दोजहद किसी को भी प्रेरित कर सकती है। मैच फ़िक्सिंग की ख़बरें हो या फिर वाजपेई और आडवाणी के बीच टकराव की खबर हो या फिर राडिया टेप्स केस से जुड़े दस्तावेज़ को प्रकाशित करने का मामला, इन तमाम खबरों पर काम करने के दौरान किस तरह की चुनौतियाँ सामने थी, इसका उन्होंने अपनी किताब में जिक्र किया है (एनडी टीवी खबर, 2015)।

विनोद मेहता 'एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया' के प्रमुख रह चुके थे। वह बीबीसी विश्व सेवा एवं बीबीसी रेडियो 4 वाहिका पर 'लेटर फ्रॉम इंडिया' कार्यक्रम के लेखक एवं प्रस्तोता चुके थे (Indian express, 2015)।

विनोद मेहता प्रयोगधर्मी एवं साहस पूर्ण संपादक में गिने जाते थे। चलताऊ पत्रिका से शुरू हुआ उनका सफर भारी-भरकम खबरों की दुनिया में सबसे कद्दावर संपादक के रूप में पूरा हुआ था। उनका पत्रकारिय एवं संपादकीय सफर बेहद कामयाब, चमकदार एवं चर्चित रहा। उनकी तमाम पत्र-पत्रिकाओं ने अपने दिखाव और सामग्री से एक विशिष्ट पहचान बनाई थी। पत्रकारिता की बिना कोई पृष्ठभूमि और तालीम के भी विनोद मेहता इतने सफल हुए तो इसमें उनका पेशेवर नज़रिया और अपने पाठकों के प्रति प्रतिबद्धता और उत्तरदायित्व था। इस कोशिश में उनका जीवन भी दिलचस्प बना रहा। विनोद मेहता साफगोई और खरे आदमी के तौर पर जाने जाते थे (बीबीसी हिंदी, 2015)।

बीबीसी हिंदी रेडियो संपादक श्री राजेश जोशी ने उनके साथ बिताए दिनों को याद करते हुए उन्हें हिंदी अंग्रेजी पत्रकारिता को जोड़ने वाला, भरोसामंद साया, शानदार शख्सियत, खुद पर हँसने वाला, खिलंदड़पन एवं पत्रकारिता के लिए अपनों की परवाह न करने वाला इंसान बताया था (बीबीसी हिंदी, 2015)।

उन्होंने विनोद मेहता को हिंदी अंग्रेजी पत्रकारिता को जोड़ने वाले व्यक्ति के रूप में रेखांकित करते हुए लिखा था कि उस दिनों यानी 1995 में मैं जन सत्ता अखबार में रिपोर्टर था। ये वो दौर था जब पीवी नरसिंह राव प्रधानमंत्री थे और उनके नज़दीकी होने के कारण तांत्रिक चंद्रा स्वामी की सत्ता के गलियारों में बहुत चलती थी। उसी दौर में मेरी एक खबर से शुरू हुए विवाद के कारण चंद्रा स्वामी जेल पहुंच गए। तभी मुझे 'आउटलुक' से विनोद मेहता का बुलावा आया। तब मैंने कभी कभार ख़बरे या लेख लिखना शुरू कर दिया था लेकिन मेरे दिमाग में दूर-दूर तक भी ये ख्याल नहीं था कि विनोद मेहता मुझे 'आउटलुक' की टीम में लेना चाहेंगे क्योंकि नब्बे के दशक तक हिंदी और अंग्रेजी पत्रकारिता एक दूसरे से जुदा दो अलग अलग दुनिया थी और इनको आपस में जोड़ने वाले पुल बहुत कम और बेहद संकरे थे। यही वजह थी कि बहुत कम लोग चाहने के बावजूद हिंदी से अंग्रेजी पत्रकारिता में कदम रख पाते थे (बीबीसी हिंदी, 2015)।

विनोद मेहता को भरोसेमंद संपादक बताते हुए राजेश जोशी ने लिखा था कि 1995 के नवंबर महीने में हिंदी भाषी पृष्ठभूमि के किसी रिपोर्टर का अंग्रेजी पत्रकारिता में जाना लगभग असामान्य सी बात थी, पर अगर विनोद मेहता सामान्य रास्ते पर चलने वाले संपादक होते तो फिर वह विनोद मेहता नहीं होते। 'हाउ कॉन्फिडेंट आर यू अबाउट यूअर इंग्लिश?' उन्होंने मुझसे पहला सवाल किया। मैंने 'इंडियन एक्सप्रेस' और 'फ़ाइनेंशियल एक्सप्रेस' में छपे अपने लेखों की कतरनें आगे बढ़ा दी, फिर आगे और कोई सवाल नहीं पूछा गया। अगले छः साल तक मैंने उसमें काम करते हुए माओवादियों के साथ बस्तर के जंगलों की खाक छानी, बिहार में जातीय नरसंहार की खबरें की, रणवीर सेना के दस्तों को ढूंढ निकाला, कारगिल युद्ध को कवर किया, राजीव गांधी की हत्या की छानबीन कर रहे जैन आयोग और मुंबई अंडर वर्ल्ड से लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तक की खबरें कि। इस पूरे दौर में विनोद मेहता एक भरोसेमंद साए की तरह हमारे आस पास रहे- कभी बेसब्री से रिपोर्टरों की कॉपी के इंतजार में कूढते हुए, कभी एडिट मीटिंग के बेहद गंभीर माहौल को अचानक और गंभीर बनाते हुए, कभी हमारी सीट के पीछे चुपचाप खड़े होकर कंप्यूटर की स्क्रीन पर हमारी अधूरी और पकी-अधपकी खबरों को पढ़ते हुए तो कभी भरे-पूरे न्यूज़ रूम के बीच ठेठ अलंकार पूर्ण हिंदी में अपनी उपस्थिति का एहसास कराते हुए। और कभी दफ्तर की पार्टियों में ठहाके लगाते और सभी से खुलकर मिलते जुलते (बीबीसी हिंदी, 2015)।

राजेश जोशी ने विनोद मेहता की शख्सियत को शानदार बताते हुए लिखा था कि, विनोद मेहता ने पत्रकारिता में अपने करियर की शुरुआत सीधे संपादक के तौर पर की थी और आखिर तक संपादक ही रहे, वे साफ़ गो और खरे आदमी के तौर पर जाने जाते थे, लेकिन उनके व्यक्तित्व को समझना आसान नहीं था। मसलन, वे अपने कुत्ते को एडिटर क्यों बुलाते थे? अध नंगी औरतों की तस्वीरें छाप ने वाली पत्रिका 'डेबोनियर' में वे नेताओं के बड़े इंटरव्यू छापते थे, जिनकी ख़ासी चर्चा होती थी। वे कभी भी संपादक के परंपरागत खांचे में फिट नहीं हुए। विनोद मेहता सामान्य पढ़ाई लिखाई में फिसड्डी रहे थे, थर्ड डिविज़न बी ए पास करने वाले मेहता ने संपादक के तौर पर अपनी बारीक़ समझ का लोहा मनवाया। वे थोड़े पंजाबी थे, थोड़े लखनवी भी, उनके मिज़ाज मैं अंग्रेजियत भी थी और यूपी वाला भदेसपन भी (बीबीसी हिंदी, 2015)।

विनोद मेहता खुद पर हंसने वाले संपादक थे विनोद के इस चरित्र पर राजेश जोशी ने लिखा था कि, दफ्तर के अंदर विनोद मेहता को आमतौर पर कभी किसी के साथ हंसी ठिठोली करते नहीं देखा जाता था। इसके बावजूद वह खुद पर हंसना जानते थे। वह दिल्ली के सफदरजंग एनक्लेव की एक इमारत की पहली मंज़िल पर अपने कमरे में बैठते थे और हर आधे एक घंटे में सीढ़ियां चढ़कर तीसरी मंजिल के न्यूज़ रूम में पहुंचकर आदतन इधर-उधर टहलने लगते। कुछ देर बाद बिना किसी से बात किए वह फिर नीचे अपने कमरे में लौट जाते। यह उनका रोज़ाना काम था। तरुण तेजपाल उस समय आउटलुक में फ़ीचर सेक्शन के संपादक थे और न्यूज़ रूम में इधर से उधर निरूद्देश्य चहल कदमी करने की विनोद मेहता

की आदत के कारण ही एक बार उन्होंने आउटलुक के अंतिम पन्ने पर छपने वाली डायरी में लिखा था-द घोस्ट हू बॉक्स (चलने फिरने वाला वैताल)! मैंने उन्हीं दिनों विनोद का एक छोटा सा कार्टून बनाकर अपने सामने वाली दीवार पर चिपका दिया था। एक दिन मेहता साहब की नजर उस पर पड़ गई और उन्होंने झुक कर बड़ी देर तक गौर से देखा और त्यौरिया चढ़ाते हुए पूछा किसने बनाया है? मैं पकड़ा गया था इसलिए कुछ बहाने करना बेकार था। इसलिए कह दिया कि मैंने बनाया है, मगर आप कहे तो मैं इसे हटा देता हूं। उन्होंने दो पल के लिए सोचा और बोले- नहीं, ठीक है, लगे रहने दो। विनोद मेहता ने अपने कमरे की दीवारों पर देश विदेश के नेताओं के साथ अपनी तस्वीरें फ्रेम करवाकर टंगवाई थीं। इन्हीं के बीच खुद अपने कई कैरीकेचर भी लगाए थे (बीबीसी हिंदी, 2015)।

विनोद मेहता की खाने की आदत के बारे में देखा जाए तो वह मीठा खाने के बहुत आदि थे। इसके अलावा टाफिया, चॉकलेट एवं आइसक्रीम खाने की खूब आदत थी। राजेश जोशी ने इसके बारे में लिखा था कि, बहुत से लोगों को शायद ही नहीं मालूम होगा कि विनोद मेहता मीठा खाने के बहुत शौकीन थे। उनकी मेज पर कांच का एक मर्तबान रखा था जिसमें टाफिया और चॉकलेट भरी रहती थी। कभी-कभी वह बाहर से आइसक्रीम मंगाकर अपने कमरे में अकेले बैठकर खाया करते थे (बीबीसी हिंदी, 2015)।

विनोद मेहता सिगार के शौकीन थे। राजेश जोशी ने विनोद के सिगार के पीने के बारे में लिखा था कि, विनोद मेहता को हालांकि दिल के ऑपरेशन के बाद बहुत परहेज से रहना पड़ता था, फिर भी कई बार वह अपनी कमीज की बाहें चढ़ाए कीमती सिगार का मजा लेते नजर आते थे (बीबीसी हिंदी, 2015)।

विनोद मेहता बेबाकी से लिखने के लिए जाने जाते थे। वह सिर्फ दूसरों पर बेबाकी से लिखते थे ऐसा नहीं है। वह खुद पर भी बेबाकी से लिखने के लिए प्रसिद्ध थे। अपनी युवावस्था के दिनों में उनके एक स्विस लड़की के साथ अंतरंग संबंधों का विनोद ने अपनी जीवनी 'लखनऊ ब्वॉय' में बेझिझक विवरण दिया है। उस औरत से बिना शादी के पैदा हुई एक लड़की का भी जिक्र किया है। जिसके बारे में उनकी पत्नी के सिवा किसी को पता नहीं था (बीबीसी हिंदी, 2015)।

विनोद मेहता खिलंदड़पन के लिए जाने जाते थे। बीबीसी हिंदी रेडियो संपादक श्री राजेश जोशी ने उनके खिलंदड़पन का किस्सा बताते हुए लिखा था कि, एक दिन किसी खबर पर बातचीत करने के लिए उन्होंने मुझे अपने कमरे में बुलाया कि तभी एक फोन आ गया। विनोद मेहता ने शुद्ध लखनवी अंदाज की हिंदी में बात की। वह बीच बीच में कहते जाते थे- हां जित्ती भाई, हां जित्ती भाई। फोन रखने के बाद मेरी और पलटे और हंसते हुए (याद रहे, वह दफ्तर में बहुत कम हंसते और मजाक करते थे) कहा- यह जित्ती भाई थे। (अब दिवंगत हो चुके कांग्रेस नेता) जितेंद्र प्रसाद। कल तक हमारे साथ लखनऊ में लड़कियों का पीछा (उन्होंने एक भदेस मुहावरे का इस्तेमाल किया जिसे छापा नहीं जा सकता) करते थे और आज देखो। (बीबीसी हिंदी, 2015)।

विनोद मेहता अपने मालिकों के प्रति वफादार रहते थे। मालिकों के साथ उनके हमेशा अच्छे रिश्ते रहते थे। मालिकों के साथ साथ उनके संबंधियों के प्रति भी वफादारी रखते थे। उनके कई छोटे-बड़े मित्र हुआ करते थे। लेकिन जब पत्रकारिता की बात आती थी तो वह किसी की परवाह न करते हुए पत्रकारिता के पक्षधर बन जाते थे। जैसा कि, अटल बिहारी वाजपेई और शरद पवार उनके मित्र थे, लेकिन उन्होंने आउटलुक में कई बार अटल जी और शरद पवार की खबर ले डाली थी। पूर्व प्रधानमंत्री अटल जी के दत्तक दामाद थे रंजन भट्टाचार्य। 'आउटलुक' ने वाजपेई सरकार पर रंजन भट्टाचार्य की असर पर जब कवर स्टोरी की तो सरकार ने 'आउटलुक' के मालिकों पर आयकर के छापे मारकर मानो इसका जवाब दिया था, लेकिन विनोद मेहता ने इस घटना पर कोई समझौता नहीं किया था। इसी तरह राडिया टेप्स के मामले में पत्रकार बरखा दत्त और रतन टाटा का नाम छापने में उन्होंने कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई थी (बीबीसी हिंदी, 2015)।

बीबीसी हिंदी के वरिष्ठ पत्रकार सईद नक़वी ने अपने मित्र विनोद मेहता को संपादक और पत्रकार के रूप में रेखांकित करते हुए लिखा था कि, वह 24 घंटे काम करने वाले संपादक थे। बहुत ईमानदार थे। उन्होंने कभी अपनी हैसियत या पद का फायदा नहीं उठाया। मुझे नहीं लगता कि, अब ऐसा पत्रकार देश को मिल पाएगा। वह बिल्कुल पुराने जमाने के संपादकों की तरह थे। उनका मकसद रहता था कि, लोगों ने जो सरकार चुनकर भेजी है उसके काम की बिना पक्षपात समीक्षा करना। सरकार को गिराना या उठाना उनका मकसद कभी रहा ही नहीं। आखिरी वक्त तक उनका यह नजरिया रहा। जो भी उन्होंने छुआ उसी में उन्हें कामयाबी मिली- 'संडे ऑब्जर्वर', 'पायनियर' और 'आउटलुक' जिसने इतिहास बना दिया। पत्रकारिता में जो पक्ष सरकार का होना चाहिए उसी पर वह कायम रहे, उसी अदा से जिए (बीबीसी हिंदी, 2015)।

ऐसा नहीं था कि विनोद मेहता ने सिर्फ पत्रकारिता की थी। उन्होंने पत्रकारिता के साथ-साथ तकरीबन छः किताब भी अंग्रेजी भाषा में लिखी थी, जो ठीक-ठीक चर्चा एवं प्रसिद्धि में रही थी। उन्होंने सबसे पहले मुंबई में रहते हुए सन 1971 में 'Bombay: A Private View' नामक किताब लिखी थी। उसके बाद 1972 में जानी-मानी हिंदी चलचित्र अभिनेत्री मीना

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कुमारी की जीवनी 'Meena Kumari' लिखी। इस किताब ने ठीक ठीक प्रसिद्धि पाई थी। सन 1999 में 'Mr. Editor,how close are you to the PM?' नामक किताब लिखी। इस किताब के बाद सन 2010 में उनकी जीवनी 'lacknow Boy: A Memoir' आई। जिस के चर्चे चारों ओर हुए थे। इस किताब में लेखक ने अपने जीवन में घटी हुई कई महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन किस्सागोई के रूप में किया है। लेखक ने बेबाक होकर अपने जीवन के कई अहम पहलुओं पर प्रकाश डाला है। 'लखनऊ ब्वॉय' में लेखक ने अपना बचपन, युवानी, शिक्षा, विदेश गमन और वापसी, अंतरंग संबंध, शादी, खिलंदडेपन, लंबी कामयाबी के लिए किया गया संघर्ष, विभिन्न घोटालों एवं गपशप इत्यादि का सनसनीखेज एवं बेबाक वर्णन किया है। सन 2012 में स्वर्गीय श्री संजय गांधी के जीवन पर आधारित किताब The Sanjay Story' लिखी। यह किताब खासी चर्चा में रही थी। विनोद मेहता ने अपने जीवन के अनुभवों को अपने अंतिम किताब एवं आत्मकथा का दूसरा हिस्सा 'Editor Unplugged' में दिया। यह किताब 2014 में प्रसिद्ध हुई थी। इस किताब में उन्होंने प्रबंधन और कॉरपोरेट के बारीक रिश्तो को उजागर किया है (बीबीसी हिंदी, 2015)।

पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं सराहनीय योगदान के लिए विनोद मेहता को कई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिल चुके हैं। जिसमें 'आजीवन उपलब्धि सम्मान 2012,' 'लोकमान्य तिलक पत्रकारिता सम्मान 2013,' 'जीके रेड्डी मेमोरियल सम्मान 2014' एवं 'यश भारती सम्मान 2015' का समावेश होता है (बीबीसी हिंदी, 2015)।

ऐसे विनोद मेहता ने लंबी बीमारी के चलते 8 मार्च 2015 के दिन दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में अंतिम सांस ली थी।

संदर्भ

1. Akbar, M. J. (2015, March 9). Vinod Mehta began as an editor and died as an editor. Retrieved from http://blogs.economictimes.indiatimes.com/et-commentary/vinod-mehta-began-as-an-editor and-died-as-an-editor/
2. http:// www.Outlook.com/ people/2/ Vinod-Mehta/ 3914
3. Jha, P. (2015, March 9). RIP vinod mehta, the editor of editors who could moke himself. Hindustan times. Retrieved fromhttp://m.hindustantimes.com/India-news/vinod-mehta-the-editor-of-editors/article1-1324084.aspx
4. Joshi, R. (2015, March 8). एडिटर जिसने पत्रकारिता को नया आउटलुक दिया [editor who gave new outlook to journalism] Retrieved from http:// www.bbc.co.uk/hindi/India/2015/ 03/150308_vinod_mehta_obit_pm
5. Naqvi, S. (2015, March 9). पतलून में नोटबुक और हेड मास्टर के बेंत [Notebook and headmaster's cane in trousers]. Retrieved from http://www.bbc.co.uk/hindi/india/2015/03/150309_vinod_mehta_Saeed_ naqvi_interview_sn
6. Press Trust of India. (2015, March 9). Former Outlook editor in chief vinod mehta passes away after prolonged illness. The Indian express. Retrieved from http://indianexpress.com/article/india/india-others/outlooks-editor-in-chief--vinod-mehta-passes-away-after-prolonged-illness/
7. Special Correspondent. (2015, March 8). Veteran journalist Vinod Mehta passes away. The Hindu. Retrieved from http://thehindu.com/news/national/vinod-mehta-passes-away/article6971565.ece/
8. TNN. (2015, March 8). Renowned journalist vinod mehta dies of multi organ failure. The Times of India. Retrieved from http://m.timesofindia. com/India/Renowned-journalist-Vinod-Mehta-dies-of-multi-organ-failure/ articleshow/46491557.cms
9. Vinod Mehta. (n. d.). In Wikipedia. Retrieved from http://en.wikipedia. org/wiki/Vinod-Mehta
10. पत्रकारिता की दुनिया में हमेशा याद आएंगे लखनऊ ब्वॉय विनोद मेहता [Lucknow boy Vinod Mehta will always be remembered in the world of journalism]. (n.d.). NDTV India. Retrieved from http://khabar.ndtv.com/news/blogs/Lucknow-boy-vinod-mehta-will-always-be-remembered-in-the-world-of-journalism-745018
11. वरिष्ठ पत्रकार विनोद मेहता का निधन [senior journalist Vinod Mehta passes away]. (2015, March 8). Retrieved from http://www.bbc.co.uk/Hindi/India/ 2015/03/150308_vinod _mehta_death_dp.